UDAIPUR BIRD FESTIVAL
2017-18

BIRDS OF UDAIPUR
(A POCKET GUIDE)

Indian Golden Oriole
(Oriolus kundoo)

वन विभाग (राजस्थान)

Common Cuckoo
(Cuculus canorus

परिंदों का स्वर्ग है उदयपुर अँचल

मेवाड़ का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक वैभव जग विख्यात है। यहां की विमोहिनी लोक परंपराएं और शिल्प वैशिष्ट्य हमारी विलक्षण थाती हैं। उदयपुर जिला प्रवासी व स्थानीय पक्षीयों की पसंदीदा आवास स्थली हैं। राज्य के 24 महत्वपूर्ण पक्षी स्थलों में से उदयपुर में जयसमंद झील एवं अभयारण्य, फुलवारी की नाल एवं सज्जनगढ़ अभयारण्य, सेई बांध, उदयपुर झील संकुल एवं बाघदड़ा कुल 6 महत्वपूर्ण पक्षी स्थल स्थित हैं। जिले से सटे पडौसी जिलों में कुंभलगढ़, सीता माता तथा माउण्ट आबू अभयारण्य, तथा सरेरी बांध कुल 4 महत्वपूर्ण पक्षी स्थल और है। इस तरह दक्षिण राजस्थान में कुल 10 महत्वपूर्ण पक्षी स्थलों का जाल फैला हैं।

नैसर्गिक सुषमा से समृद्ध राज्य के इस दक्षिण अंचल में सज्जनगढ़, फुलवारी, जयसमंद, माउण्ट आबू, कुंभलगढ़, टॉडगढ़–रावली, सीतामाता एवं बस्सी जैसे अभयारण्य स्थित हैं जिनमें वनवासी, जलीय, थलीय एवं घास क्षेत्रों के पक्षियों एवं अन्य प्राणियों की विपुल विविधता विद्यमान हैं। अंचल में लगभग 242 तरह के पक्षी ज्ञात हैं। जलाशयों के तटों व वृक्षों पर विचरण करते देशी– विदेशी परिन्दे और सघन वनाच्छादित क्षेत्रों में उन्मुक्त घूमते वन्यजीवों से इस जिले की अपनी अलग ही पहचान हैं।

जिला मुख्यालय उदयपुर सहित जिले के विभिन्न जलाशयों में शीतकाल के आरंभ होते ही, अक्टूबर–नवम्बर माह में देश–विदेश के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षी आते हैं। इस दौरान इन जलाशयों में क्रीड़ारत पक्षियों की उपस्थिति पक्षी एवं प्रकृति प्रेमियों को बरबस ही आकर्षित करती हैं।

उदयपुर शहर की झीलों–तालाबों के साथ ही निकटवर्ती जलाशयों जैसे पिछोला, स्वरूप सागर, रूप सागर, बडी तालाब, फतहसागर, जयसमंद झील, थूर की पाल, चौकडिया आदि जलाशयों में बडी संख्या में पक्षियों को क्रीडाएं करते देखा जा सकता हैं। एशिया की दूसरी सबसे बडी मानव निर्मित मीठे पानी की झील जयसमंद उदयपुर जिले की शान है।

अंचल के जलाशयों में रडी शेलडक, नदर्न शॉवलर, पिनटेल, कॉमन पोचार्ड, टफ्टेड पोचार्ड, गेडवॉल, मलार्ड, विजन, स्पॉट–बिल्ड डक, कॉम्ब डक, विसलिंग डक, कॉमन टील, कॉटन पिग्मी गूज, व्हाईट (वूली) नेक्ड स्टॉर्क, ओपन बिल स्टॉर्क, ब्लैक आईबिस, व्हाईट आईबिस, ग्लॉसी आईबिस, परपल हैरोन, नाईट हैरोन, कॉमेरिन्ट, फ्लेमिंगो, पैलिकन, बार–हैडेड़ गूज, ग्रे लेग गूज तथा विभिन्न प्रजातियों के ईग्रेट्स भी दिखाई देते हैं। स्थानीय पक्षियों में सारस क्रेन, मोर व अन्य प्रकार के घरेलू पक्षी अहर्निश इस अंचल को अपने कलरव से गुंजायमान रखते हैं। झीलों के कैचमेन्ट में कांटेदार वन क्षेत्र में जगह–जगह दुर्लभ व्हाईट–नैप्ड़ टिट पाया जाता हैं।

DUSKY EAGLE-OWL
(Bubo coromandus)

Montagu's Harrier
(Circus pygargus)

Peregrine Falcon
(Falco peregrinus)

उदयपुर की झीलें और पक्षी

उदयपुर की झीलों का एक संकुल है जो हमें विरासत में मिला हैं। जरूरत पडने पर श्रेणीबद्ध रूप से एक से पानी दूसरी झील में स्थानान्तरित किया जा सकता हैं। स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के आदर्श पर्यावरण के रूप में हमारी झीलों की पहचान सदैव रही है। उदयपुर की झीलों में पिछोला झील का अपना अह्म स्थान है। यह शहर में स्थित सबसे पुरानी एवं सबसे बडी झील है जिसका क्षेत्रफल 6.96 वर्ग किमी. है। इस झील को पीछू बंजारा द्वारा बनाया गया था। तत्कालीन पिछोली गांव की समीपता से भी झील का नाम जुडा है। इस झील में 'लेक पैलेस' एवं 'जग मन्दिर' होटल स्थित है।

पिछोला झील के उत्तर में फतहसागर झील स्थित है जिसका जल फैलाव 4.5 वर्ग किमी. है। इस झील का निर्माण महाराणा जयसिंह ने 1678 ईस्वी में कराया था जिसका पुर्नरूद्धार महाराणा फतहसिंह द्वारा 1889 ईस्वी में कराया गया। उदयपुर शहर के पूर्व में देबारी के पास सबसे बडी झील उदयसागर स्थित है जिसका निर्माण महाराणा उदयसिंह ने 1559 में प्रारंभ किया जो 1565 तक चला। शहर के बीच से गुजरने वाली आयड नदी अपना प्रवाह उदयसागर में डालती है। इसी आयड़ नदी की घाटी में 5000 वर्ष पूर्व प्रचीन आयड़ सभ्यता ने विकास किया था।

रंगसागर नामक झील का निर्माण 1668 में तत्कालीन महाराणाओं द्वारा कराया गया। शहर की अन्य प्रमुख झीलों में एक स्वरूप सागर का निर्माण 1678 महाराणा स्वरूप सिंह द्वारा कराया गया था। यह झील रंगसागर एवं फतहसागर से जुडी हुई हैं। एक छोटी झील दूध तलाई भी कम सुन्दर नहीं है। यह झील माछला मगरा वन खाण्ड की तलहटी में स्थित है तथा पिछोला झील से जुडी हुई हैं।

शहर के दक्षिण छोर की तरफ स्थित गोवर्धन सागर भी एक दर्शनीय स्थल हैं। यह पिछोला झील से एक लिंक नहर से जुडी हुई हैं। शहर के पश्चिम में बड़ी गांव के पास स्थित बड़ी तालाब का निर्माण महाराणा राजसिंह ने कराया था। सज्जनगढ़ अभयारण्य के उत्तरी भाग से इस जलाशय का मनोहारी दृश्य देखने को मिलता हैं।

उदयपुर नगर एवं इसकी परिधि के जलाशयों में लगभग 242 प्रजातियों के पक्षी पाये जाते हैं। इनमें करीब 102 प्रजातियां जलीय एवं 140 प्रजातियां स्थलीय पक्षियों की हैं। उदयपुर की झीलों एवं आस पास के जलाशयों में 150 प्रजातियां शीतकालीन प्रवासी पक्षियों की हैं जो प्रतिवर्ष शीतकाल में प्रवास पर आती हैं।

झील के किनारे बबूल और अन्य झाडियां पक्षियों के प्रजनन के दौरान घोंसले बनाने में उपयोगी साबित होती हैं जिनमें कई स्थानीय जलीय पक्षी प्रतिवर्ष मानसून दौरान प्रजनन करते हैं। चांदपोल दरवाजे के पास स्थित छोटे टापू पर प्रजनन काल के दौरान ओपन बिल स्टॉर्क की नीड कॉलोनी देखने लायक होती है। झीलों की परिधि पर शहर में जगह-जगह ईग्रेट एवं हैरोन प्रजनन काल में अपनी नीड़ कॉलोनियां बनाते हैं।

शीतकाल में आने वाले प्रमुख पक्षियों में बार-हेडेड गूज, ग्रे लेग गूज, ब्राह्यमणी ड़क, पिनटेल, गेडवाल, कॉमन टील, मलाड, यूरेशियन विजन, नॅदर्न शॉवलर, गारगेनी, कॉमन पोचार्ड, टफ्टेड पोचार्ड आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा झील में पैलिकन व फ्लेमिंगों भी आते रहते हैं। पिछले बीस वर्षो में आने वाले पक्षियों का यदि आंकलन करें तो धीरि-धीरि पक्षियों की संख्या में कमी होती प्रतीत हो रही है। शहर की झीलों के बजाय ग्रामीण क्षेत्रों की झीलों में पक्षियों की बड़ी संख्याएं देखने को मिलती हैं।

झीलों का पर्यटन विकास में बहुत महत्व हैं। झीलों में स्थित पार्क एवं होटलों का अपना आकर्षण हैं। झीलों के किनारे स्थित होटल भी पर्यटकों द्धारा ठहरने हेतु पसंद किए जाते है। शादी-समारोह, फिल्म शूटिंग आदि हेतु लोग यहां इसलिए पहुंचते है क्योंकि झीलों की सुन्दरता एवं उनकी वजह से सुखद जलवायु सभी को आकर्षित करती हैं। नौकायन, एंगलिंग आदि भी बिना झीलों के संभव नहीं। नि:सन्देह झीलें हमारी आर्थिक समृद्धि के लिए बहुत जरूरी हैं।

प्रदूषण हमारी झीलों के लिए बड़ा खातरा है। अति-पर्यटन, जलग्रहण क्षेत्रों में वन विनाश, किनारे तक निर्माण कार्य आदि भी झीलों की पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खातरा हैं। जन- जागरण के प्रयास लगातार जरूरी हैं ताकि झीलों की स्वच्छता एवं सुन्दरता को निरन्तर बनाये रखा जा सकें।

पुस्तक में दर्शाए गये अधिकांश चित्र नर-पक्षी के हैं

उदयपुर की झीलों में दिखाई देने वाले सामान्य जलीय पक्षी

1 लिटल ग्रेब
2. व्हिसलिंग टील
3. कॉम्ब डक
4. स्पॉट-बिल्ड़ डक
5. रडीशैल डक
6. ग्रे लेग गूज
7. बार हैडेड गूज
8. नॅदर्न पिनटेल
9. नॅदर्न शॉवलर
10. यूरेशियन विजन
11. गारगेनी
12. कॉमन पोचार्ड
13. व्हाईट आई पोचार्ड
14. टफ्टेड पोचार्ड
15. कॉमन टील
16. कॉटन पिग्मी गूज
17. गेडवाल
18. मलार्ड
19. ब्राउन-हैडेड़ गल
20. ग्रेट व्हाईट पैलिकन .
21. ग्रेटर फ्लेमिंगो
22. लिटिल कॉरमोरेंट
23. डार्टर (स्नेक बर्ड़)
24. पोण्ड हैरॉन
25. लिटिल ईग्रेट
26. इण्डियन शेग
27. व्हाईट आईबिस
28. ब्लैक आईबिस
29. ग्लॉसी आईबिस
30. स्पूनबिल
31. ब्लैक -क्राउन नाईट हैरान
32. ग्रे हैरॉन
33. परपल हैरॉन
34 कैटल ईग्रेट
35 पेन्टेड स्टॉर्क
36 ओपन बिलस्टॉक स्टॉर्क
37 व्हाईट-नेक्ड़ स्टॉर्क
38 रैड़-वैटल्ड़ लैपविंग
39 यलो-वैटल्ड़ लैपविंग
40 रीवर टर्न
41 इंडियन थिकनी
42 सेण्ड पाईपर
43 कॉमन रिंग्ड प्लॉवर
44 ब्लैक-विंग्ड स्टिल्ट
45 पैन्टेड़ स्नाईप
46 डाल्मेशियन पैलिकन
47 व्हाईट-ब्रेस्टेड किंगफिशर
48 पाईड किंगफिशर
49 कॉमन किंगफिशर
50 कॉमन कूट्स
51 फैजेन्ट टेल्ड जेकाना
52 ब्रॉज विंग्ड़ जेकाना
53 व्हाईट ब्रेस्टेड वाटरहैन
54 परपल मूरहैन
55 ऑस्प्रे
56 मार्श हैरियर
57 ब्लेक-टेल्ड गॉडविट
58 सारस क्रेन
59 डैमोजल क्रेन
60 फैरोजीनस पोर्चड

● स्थानीय पक्षी (Resident) ● शीत प्रवासी (Winter Migrant) ● ग्रीष्म/पथ प्रवासी (Summer/Passage Migrant)

1
सारस
Sarus Crane
●

2
राजहंस
Greylag goose
●

3
सरपट्टी सवन
Bar-headed Goose
●

4
टिकड़ी
Common Coot
●

5
नकटा
Comb Duck
●

6
सींखपर
Northern Pintail
●

7
छोटी डुबडुबी
Little Grebe
●

8
जाँघिल
Painted Stork

9
लोहारजंग
Black-necked Stork

10
घोंघिल
Asian Openbill

11
चमचा
Eurasian Spoonbill

12
हाजी लगलग
Woolly-necked Stork

13
सफेद हवासिल
Great White Pelican

14
नीलसर
Mallard

15
लालसिर बतख
Red-crested Pochard

16
छोटी मुर्गाबी
Common Teal

17
तिदारी बतख
Northern Shoveler

18
गिर्री बतख
Cotton Pymy-goose

19
गुगरल बतख
Spot-billed Duck

20
छोटी लालसिर बतख
Common Pochard

21
पियासन बतख
Eurasian Wigeon

22
चेता बतख
Garganey

23
छोटी सिलही
Lesser Whistling Duck

24
अबलक बतख
Tuffed Duck
●

25
सुर्खाब
Ruddy Shelduck
●

26 A
कुर्चिया बतख
Ferruginous Pochard
●

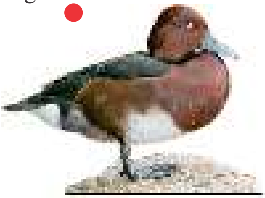

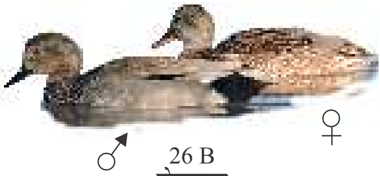

26 B
गेडवाल
Gadwall
●

27
जामुनी जलमुर्गी
Purple Swamphen
●

28
सफेद-छाती जलमुर्गी
White-brested Waterhen
●

29
सामान्य जलमुर्गी
Common Moorhen
●

30
जल पीपी
Bronze-winged Jacana
●

31
पिहो
Pheasant-tailed Jacana
●

32
सफेद-बुज्जा
Black-headed Ibis

33
कौआरी बुज्जा
Glossy Ibis

34
काला बुज्जा
Black-Ibis

35
बानवै
Oriental Darter

36
सिलेटी अंजन
Grey Heron

37
नरी अंजन
Purple Heron

38
गजपांव
Black-winged Stilt

39
बड़ा हंसावर
Greater Flamingo

40
छोटा सुरमा-चौबाहा
Common Red Shank

41
टिटहरी
Red-wattled Lapwing

42
जर्द टिटहरी
Yellow-wattled lapwing

44
करछिया बगुला
Little Egret

43
अन्धा बगुला
Pond Heron

46 A
युरेशियाई कर्वान
Eurasian Thick-knee

45
गाय बगुला
Cattle Egret

46 B
गुडेरा
Black-tailed Godwit

47
छोटा पनकौवा
Little Cormorant

48
बड़ा कर्वान
Great Thick-knee

49
जल कुररी
River Tern

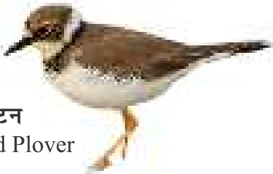

50
जीरा बटन
Little Ringed Plover

White-throated Kingfisher
(Halcyon smyrnensis)

Tricoloured Munia
(Lonchura malacca)

Coppersmith Barbet
(Psilopogon haemacephalus)

51
मोर
Indian Peafowl

52
हीरामन तोता
Alexandrine Parakeet

53
कंठीवाला तोता
Rose-ringed Parakeet

54
टुइंया तोता
Plum-headed Parakeet

55
सामान्य पपीहा
Common Hawk Cuckoo

56
हरा पतरंग
Green Bee-eater

57
क़ाफल पक्का
Indian Cuckoo

58
अबलक चातक
Jackobin Pied Cuckoo

59
सामान्य कबूतर
Blue Rock Pigeon

60
धवर फाख़ता
Eurasian Collared Dove

61
चितरोखा फाख़ता
Spotted Dove

62
ईंट कोहरी फाख़ता
Red Collared Dove

63
टुटरूं
Laughing Dove

64
कुहार भटतीतर
Chestnut-bellied Sandgrouse

65
सामान्य हरियल
Yellow-footed Green Pigeon

66
बड़ा मोहक
Greater Coucal

67
कोयल
Asian Koel

68
छुटकन्ना उल्लू
Short-eared Owl

69
सामान्य खूसट
Spotted Owlet

70
करेल उल्लु
Barn Owl

71
हुदहुद
Common Hoopoe

72
विलायती नीलकण्ठ
European Roller

73
छोटा किलकिला
Common Kingfisher

74
देसी नीलकण्ठ
Indian Roller

75
कौरिल्ला किलकिला
Pied Kingfisher

76
सफेद छाती किलकिला
White-throated
Kingfisher

77
ठठेरा बसन्था
Coppersmith
Barbet

Tickell's blue flycatcher

(Cyornis tickelliae)

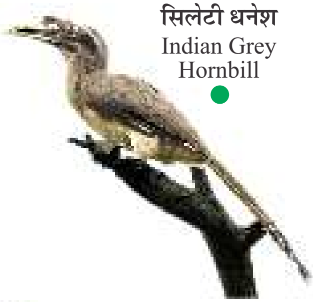

78
सिलेटी धनेश
Indian Grey Hornbill

79
सामान्य चील
Black Kite

80
शिकरा
Shikra

81
कपासी चील
Black-winged Kite

82
सफेद गिद्ध
Egyptian Vulture

83
देसी गिद्ध
Indian Vulture

84
चमर गिद्ध
White-rumped Vulture

85
घरेलु कौवा
House Crow

86
लाल तरूपिक
Rufous Treepie

87
स्वर्ण पीलक
Eurasian Golden Oriole

88
देसी नौरंग
Indian Pitta

89
छोटा राजालाल
Small Minivet

90
सामान्य भुजंगा
Black Drongo

91
मटिया लहटोरा
Bay-backed Shrike

92
नीलकण्ठी लूसीनिया
Bluethroat

93
सफेद नचनी
White-browed Fantail

94
दूधराज
Asian Paradise flycatcher

95
सामान्य शोबीगी
Common Iora

96
दयाल
Oriental-Magpie Robin

97
काला थिरथिरा
Black Redstart

98
कलचुरी
Indian Robin

99
गंगा मैना
Bank Myna

100
सामान्य मैना
Common Myna

101
अबलकी मैना
Asian Pied Starling

102
पुहय्या
Black-headed Starling

103
गुलाबी मैना
Rosy Starling

104
सिलेटी रामगंगरा
Great Tit

105
गुलदुम बुलबुल
Red-vented Bulbul

106
लीशरा अबाबील
Wire-tailed Swallow

107
कालपुठ अंगारा कठफोड़ा
Black-rumped Flameback

108
डूमरी,गौगाई, चरखी (सतभाई)
Common Babbler

109
बड़ी गौगाई, चरखी (सतभाई)
Large Grey Babbler

110
दबक चिरी
Ashy-crowned Sparrow Lark

111
कलपीठ रामगंगरा
White-naped Tit

112
सफेद खंजन
White Wagtail

113
सफेद भौंह खंजन
White-browed Wagtail

114
बैंगनी शक्कर खोरा
Purple Sunbird

115
चोटीदार चंडूल भरत
Crested Lark

116
सामान्य बया
Baya Weaver

117
चोटी पत्थर चिरटा
Crested Bunting

118
चित्ती मुनिया
Scaly breasted Munia

119
सादा मुनिया
Indian Silverbill

120
चित्रित तीतर
Painted Francolin

121
जंगली लवा
Jungle Bush Quail

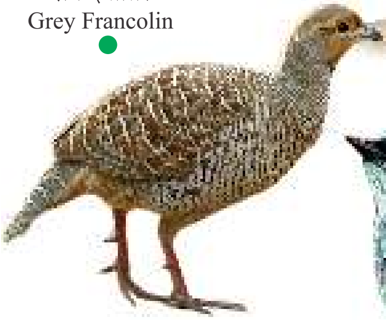

122
सफेद तीतर
Grey Francolin

123
वर्डीटर मछरिया
Verditer Flycatcher

124
सिलेटी दुम-फुदकी
Ashy Prinia

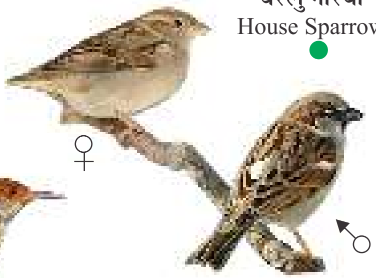

125
घरेलु गौरैया
House Sparrow

126
सामान्य दर्जीन
Common Tailor Bird

127
पूर्वी बबूना
Oriental White-eye

पक्षी जगत और हम

पक्षीः

गर्म रक्त वाले, अण्डज प्राणी जिनके दो पैर होते हैं एवं जिनके शरीर पर पंखों का आवरण एवं शरीर पर एक जोडी डैने होते हैं, पक्षी कहलाते हैं। भोजन पकडने हेतु दांत रहित चिमटीनुमा चौंच की उपस्थिति इनका मुख्य लक्षण होता है।

पक्षियों का महत्वः

पक्षियों का धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, जैविक, पारिस्थतिकी एवं वैज्ञानिक महत्व होता है। परागण एवं प्रकीर्णन जैसी जैविक क्रियाओं से ये मनुष्यों हेतु फल व बीजों के रूप में खाद्य पदार्थ पैदा करने में अहम् भूमिका निभाते हैं। गिद्ध जैसे पक्षी मृत पड़े जीवों को खाकर सफाई का जिम्मा संभालते हैं। बाज व उल्लू, चूहों आदि को नियन्त्रित करते हैं। पक्षी कठोर बीजावरण वाले बीजों को खाकर उन्हें उपच रूप में मल में निकाल सहजता से उगने में सक्षम बनाते हैं। पक्षियों की लाभदायक भूमिका के कारण ही मोर, गरूड़, सारस, नीलकण्ठ आदि का धर्म-शास्त्रों में उल्लेख मिलता हैं।

बर्ड वॉचिंग का उद्देश्य एवं महत्वः

प्राकृतिक सन्तुलन में बहुत बडी भूमिका निभाने वाले पक्षियों का संरक्षण बर्ड वॉचिंग के माध्यम से ही किया जा सकता हैं। बर्ड वॉचिंग से मनुष्य को प्रकृति का सानिध्य मिलता है और उसके तनावों और मनोरोगों का अन्त होता हैं। पक्षियों के बीच जाकर प्रसन्नता एवं आनंद की अनुभूति होती हैं। पक्षियों की फोटोग्राफी रोजगार का साधन बन सकती हैं। बर्ड वॉचिंग से मनुष्य का पक्षियों संबंधी ज्ञान बढ़ता हैं। बर्ड वॉचिंग से पक्षीविज्ञान के रहस्यों की नयी-नयी जानकारीयां उजागर होती हैं।

बर्ड वॉचिंग क्या है ?

पक्षियों को उनके प्राकृतिक आवास में, उनकी जैविक क्रियाओं को करते हुए देखना, पहचानना एवं आनंद अनुभव करना ही बर्ड वॉचिंग हैं। पक्षियों को पिंजरे में बंद रखना, पिंजरे में रखे पक्षियों को देखना बर्ड वॉचिंग नहीं हैं।

बर्ड वॉचिंग कैसे व कहां करें ?

बर्ड वॉचिंग नंगी आंखों से लेकर बायनाकुलर, टेलीस्कोप व स्पॉटिंग स्कॉप की मदद से किया जाता है। हम अपने आस पास, किचन गार्डन, मोहल्ले की नालियों के आस पास, झीलों के किनारे एवं झीलों के अन्दर, सार्वजनिक उद्यानों, चुग्गा स्थलों व धार्मिक स्थानों के पास, होटलों के

जूठन फैंकने के स्थानों पर, मृत पशु फैंकने की जगहों पर, कचरा स्थलों पर, नदी, नालों, तालाबों, एनीकटों, बांधों व अन्य जलाशयों के आसपास, चारागाहों एवं वन क्षेत्रों में हर कहीं किसी न किसी पक्षी को अवश्य देख सकते हैं। इन स्थानों पर पक्षी घोंसला बनाते हुए, बच्चों का लालन-पालन करते हुए, चहकते हुए, पानी या मिट्‌टी में नहाते हुए एवं अन्य कोई ना कोई गतिविधि करते हुए अवश्य मिल जाएंगे। इनकी क्रियाओं में व्यवधान डाले बिना, शान्ति से एवं धीरे-धीरे कुछ पास जाकर किसी वृक्ष, झाडी, भवन या किसी दूसरी चीज की ओट में रहकर इनकी गतिविधियों को देखा जा सकता हैं तथा पक्षियों के शरीर की बनावट, रंगों, चलने के ढ़ंग, बोली आदि का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हैं।

प्रारंभ में आसपास के बडे पक्षियों जैसे मोर, कोयल, कौवा, तोता, फाख्ता, नीलकंठ, बगुला, बतख, गिद्ध, कबूतर आदि को नंगी आंखों से देख कर ही पक्षी अवलोकन का श्री गणेश किया जा सकता है। बाद में छोटे व दूरस्थ पक्षियों को बायनोकुलर व टेलीस्कोप से देखा जा सकता हैं। बायनोकुलर जिनकी आवर्धन क्षमता एवं आब्जेटिव लैंस की चौडाई माप का अनुपात 1:5 हो वह बर्ड वॉचिंग के लिए उत्तम रहता हैं। टेलीस्कोप में एक आंख से देखा जा सकता है तथा इसे एक जगह रख कर दूर के पक्षियों को देखा जा सकता है। इससे उडते पक्षियों को देखना कठिन होता हैं।

बर्ड वॉचिंग दौरान वेशभूषा:

पक्षी देखने के लिए सफेद व तडक-भड़क वाले कपडे नहीं पहनने चाहिए। हरे व खाकी रंग के कपड़े उत्तम रहते हैं क्योंकि इस रंग के कपड़े आसपास के वातावरण में घुल मिल जाते हैं। पक्षियों को देखने के लिए उचित दूरी अवश्य बनानी चाहीए। सिर पर हरी या खाकी कैप भी पहननी चाहिए ताकि बालों पर गिरने वाली सूर्य की रोशनी की चमक से पक्षी व्यवधान महसूस कर उडें नहीं।

बर्ड वॉचिंग हेतु साजो सामान:

बर्ड वॉचिंग करने वाले व्यक्ति के पास बायनॉकुलर, पक्षियों की फिल्ड-गाईड, नोट-बुक, पैन या पेन्सिल, पानी की बोतल, उचित वेशभूषा, एक हरा या खाकी थैला या हैवर सैक जिसमें की सामान रखा जा सकें, होने चाहिए। बायनोकुलर न हो तो नंगी आंखों से ही बर्ड वॉचिंग करें। यदि कैमरा हो तो और भी अच्छा होता है ताकि पक्षियों की फोटोग्राफी भी की जा सकें।

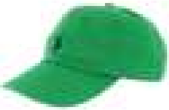

बर्ड वॉचिंग कैसे करें ?

जब भी मौका मिले, पक्षियों को ध्यान से देखें। उसकी ऊंचाई, आकार, प्रकार, पैरों की उंगलियों की संख्या, पैरों का रंग, शरीर के विभिन्न भागों के पंखों के रंग, आंखों की विशेषता, सिर पर कलंगी की उपस्थिति आदि संबंधी जानकारी नोट करें। प्रारंभ में पक्षी का आकार दूसरे जाने पहचाने पक्षी से तुलना कर नोट कर सकते हैं जैसे कबूतर से बड़ा या छोटा आदि। निरीक्षण की दिनांक एवं समय भी रिकार्ड करें। पक्षी के आवाज की जानकारी जैसे वह पानी में, पानी के किनारे, घने वन में, वन के किनारे, खेतों में, शहर में, कचरा घर के पास या जहां भी मिला हो उसकी पूरी जानकारी अंकित करें। देखने के समय वह क्या गतिविधि कर रहा था, वह भी लिखें। पक्षियों के शरीर के विभिन्न अंगों की विशेषताओं एवं रंगों का रिकार्ड अवश्य रखें। पक्षी-गाइड पुस्तिका या पक्षियों के जानकार व्यक्ति से देखे हुए पक्षी का नाम जाने एवं पहचान प्रमाणित करावें। स्थानीय लोगों से पूछकर पक्षी का स्थानीय नाम भी नोट करें।

बर्ड वॉचिंग के दौरान क्या न करें ?

बर्ड वॉचिंग के दौरान मोबाइल से संगीत न सुनें। शोर-शराबा, बातचीत नहीं करें। अण्डों-घोंसलों को कदापि न छेड़े। पालतु पशु जैसे कुत्ते, बिल्ली साथ न रखें, उसके निकलने का इन्तजार करें। उस पर पत्थर न फेंके। यदि छुपा पक्षी बाहर नहीं आ रहा है तो उसे छोड़ दीजिए, दूसरे पक्षी हेतु आगे बढ़ जाइयें। पक्षी आवासों में प्रदूषण न फैलायें।

Eurasian Spoonbill
(Platalea leucorodia)

(Great White Pelican)
(Pelecanus onocrotalus)

Greater Flamingo
(Phoenicopterus roseus)

पक्षियों के पैरों के प्रकार

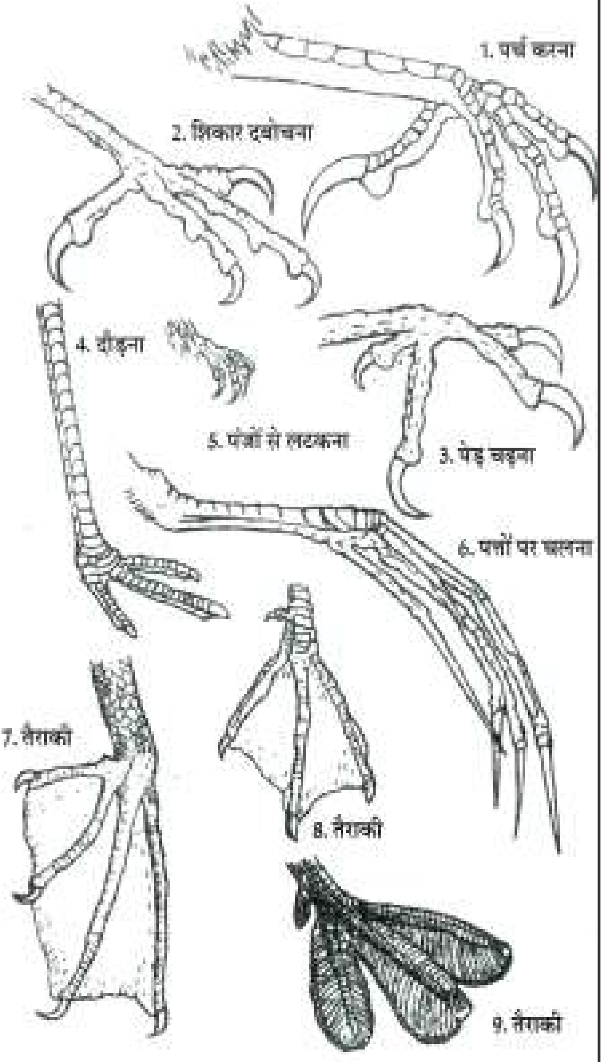

1. जंगली कौवा 2. बेसरा 3. कठफोड़ा 4. कुकरी 5. अबाबील
6. जसाना 7. धोमरा 8. पनकौवा 9. पनडुब्बी

दक्षिण राजस्थान के महत्वपूर्ण जलाशय

क्र.सं. जलाशय का नाम	स्थिती
1. पिछोला	उदयपुर शहर
2. फतहसागर	उदयपुर शहर
3. दूधतलाई	उदयपुर शहर
4. स्वरूप सागर	उदयपुर शहर
5. गोवर्धन सागर	उदयपुर शहर
6. रूप सागर	उदयपुर शहर
7. नेला तालाब	उदयपुर शहर
8. बड़ी तालाब	सज्जनगढ़ अभयारण्य के पश्चिम में
9. उदय सागर	उदयनिवास के पास
10. बाघदरा तालाब	बाघदरा नेचर पार्क में
11. चौकड़िया तालाब	झाड़ोल रोड़ पर
12. ओगणा बाँध	ओगणा गांव के पास
13. सेई डैम	देवला के पास
14. घासा	मावली के पास
15. भटेवर तालाब	सिंघानिया विश्वविद्यालय के पास
16. आमलिया	भटेवर के पास
17. सरजना एवं कंबोडिया	वल्लभनगर में
18. मेनार	मंगलवाड़ रोड़ पर
19. खेरोदा	खेरादा गांव के पास
20. नगावली	मंगलवाड़ के पास
21. मंगलावाड़	मंगलवाड़ के पास
22. घोसुण्डा	मंगलवाड़ के पास
23. वागन बाँध	उदयपुर - बड़ी सादड़ी रोड़ पर
24. बडवई	भीण्डर के पास
25. किशन-करेरी	भीण्डर के पास
26. डाया	जयसमंद रोड़ पर
27. पिलादर तालाब	जयसमंद अभ्यारण्य में
28. जयसमंद	सलूम्बर रोड़ पर
29. हरचन्द	सराड़ा तहसील में
30. केजड़	सराड़ा के पास
31. सोमकागदर	ऋषभदेव के पास
32. कैलाशपुरी	नाथद्वारा रोड़ पर

क्र.सं.	जलाशय का नाम	स्थिती
33.	राजसमंद	राजसमंद शहर में
34.	राजियावास तालाब	राजियावास गांव के पास (राजसमंद)
35.	गुरला तालाब	उदयपुर भीलवाड़ा रोड़
36.	मेजा डेम	भीलवाड़ा जिले में मेजा गांव के पास
37.	अरवड़ बाँध	भीलवाड़ा जिले में
38.	सरेरी बाँध	भीलवाड़ा जिलें में सरेरी गांव के पास
39.	त्रिवेणी संगम	भीलवाड़ा जिले में
40.	जोगी तालाब	उदयपुर अहमदाबाद रोड़
41.	टीडी डेम	उदयपुर जिले में अहमदाबाद रोड़
42.	बागोलिया	मावली के पास
43.	पुरोहित जी का तालाब	गमधर पौधशाला के पास
44.	कंथारिया बाँध	झाड़ोल तहसील में
45.	झाडोल बाँध	झाड़ोल गांव के पास
46.	मानसी वाकल बाँध	गोराणा गांव के पास
47.	रणकपुर/सादड़ी बाँध	रणकपुर के पास
48.	जवाई बाँध	जवाई बाँध रेल्वे स्टेशन के पास
49.	बस्सी बाँध	बस्सी अभ्यारण्य में
50.	गैप सागर	डूंगरपुर शहर में
51.	सोम-कमला-आम्बा बाँध	आसपुर के पास
52.	बाघेरी का नाका	कुंभलगढ़ रोड़
53.	जाखम	सीता माता अभ्यारण्य में
54.	नन्द संमद	जावर माईन्स के पास
55.	बाघदड़ा	बाघदड़ा नेचरपार्क में
56.	रूपसागर	उदयपुर शहर में
57.	नागमाला	फलासिया-सोम रोड़ पर
58.	साबेला	डूंगरपुर के पास
59.	चुण्डावाड़ा	डूंगरपुर जिले में बिछीवाड़ा के पास
60.	डीमिया	डूंगरपुर जिले में डीमिया गांव के पास
61.	लक्ष्मण सागर	डूंगरपुर में मांडव गांव के पास
62.	लोहारिया	बांसवाड़ा में लोहारिया गांव के पास
63.	माही	बांसवाड़ा जिलें में
64.	कडाना बैक वाटर	बांसवाड़ा जिलें में
65.	करावाड़ा	डूंगरपुर जिले में करावाड़ा के पास
66.	धम्बोला	डूंगरपुर जिले में करावाड़ा के पास

प्रेक्षण

प्रेक्षण

Long-tailed Shrike
(Lanius schach)

Indian Scops Owl
(Otus bakkamoena)

Office :
Deputy Conservator of Forests
Wildlife, Udaipur
E-Mail : dcfwludz@gmail.com